पाठ 15

एक स्त्री का पत्र

(प्रस्तुत पाठ में बिन्दू के माध्यम से नारी-जीवन के सामाजिक बन्धन, उसके शोषण और दर्द को मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है।)

पूज्यवर,

आज पन्द्रह साल हुए हमारे ब्याह को। हम तब से साथ ही रहे। अब तक चिट्ठी लिखने का मौका नहीं मिला। तुम्हारे घर की मझली बहू जगन्नाथपुरी आयी थी, तीर्थ करने आयी तो जाना कि दुनिया और भगवान के साथ मेरा एक और नाता भी है। इसलिए आज चिट्ठी लिखने का साहस कर रही हूँ। इसे मझली बहू की चिट्ठी न समझना। वह दिन याद आता है, जब तुम लोग
मुझे देखने आये थे। मुझे बारहवाँ साल लगा

था। सुदूर गाँव में हमारा घर था। पहुँचने में कितनी मुश्किल हुई तुम सबको। मेरे घर के लोग आव-भगत करते-करते हैरान हो गये। विदाई की करुण धुन गूँज उठी। मैं मझली बहू बनकर तुम्हारे घर आयी। सभी औरतों ने नयी दुल्हन को जाँच परखकर देखा। सबको मानना पड़ा- बहू सुन्दर है।

मैं सुन्दर हूँ, यह तो तुम लोग जल्दी
भूल गये। पर मुझमें बुद्धि है, यह बात तुम लोग चाह कर भी ना भूल सके मां कहती थी औरतों के लिए तेज दिमाग भी एक बला है | लेकिन मैं क्या करूं तुम लोगों ने उठते बैठते कहा यह बहुत तेज है लोग बुरा भला कहते हैं तो कहते रहे मैंने सब माफ कर दिया । मैं छुप-छुपकर कविता लिखती थी कविताएं थी तो मामूली लेकिन उनमें मेरी अपनी आवाज थी वह कविताएं तुम्हारे रीति-रिवाजों के बंधनों से आजाद थीं ।

मेरी नन्हीं बेटी को छीनने के लिए मौत मेरे बहुत पास आई | उसे ले गई, पर मुझे छोड़ गई | मां बनने का दर्द मैंने उठाया, पर मां कहलाने का सुख ना पा सकी |

इस हादसे को भी पार किया फिर से जुट गयी रोज-मर्रा के काम काज में। गाय-भैंस, सानी-पानी में लग गयी। तुम्हारे घर का माहौल रूखा और घुटन भरा था। यह गाय-भैंस ही मुझे अपने से लगते थे। इसी तरह शायद जीवन बीत जाता।

आज का यह पत्र लिखा ही नहीं जाता। लेकिन अचानक मेरी गृहस्थी में जिन्दगी का एक बीज आ गिरा। यह बीज जड़ पकड़ने लगा और गृहस्थी की पकड़ ढीली होने लगी। जेठानी जी की बहन, बिन्दू अपनी माँ के गुजरने पर, हमारे घर आ गयी।

मैंने देखा तुम सभी परेशान थे। जेठानी जी के पीहर की लड़की, न रूपवती न धनवती। जेठानी दीदी इस समस्या को लेकर उलझ गयी। एक तरफ बहन का प्यार तो एक तरफ ससुराल की नाराजगी।

अनाथ लड़की के साथ ऐसा रूखा बर्ताव होते देख मुझसे रहा न गया। मैंने बिन्दू को अपने पास जगह दी। जेठानी दीदी ने चैन की साँस ली। गलती का बोझ मुझ पर आ पड़ा।

पहले मेरा स्नेह पाकर बिन्दू सकुचाती थी। पर धीरे-धीरे वह मुझे बहुत प्यार करने लगी। बिन्दू ने प्रेम का विशाल सागर मुझ पर उड़ेल दिया। मुझे कोई इतना प्यार और सम्मान दे

सकेगा, यह मैंने सोचा भी न था।

बिन्दू को जो प्यार दुलार मुझसे मिला वह तुम लोगों को फूटी आँखों न सुहाया। याद आता है वह दिन, जब बाजूबन्द गायब हुआ। बिन्दू पर चोरी का इल्जाम लगाने में तुम लोगों को पल भर की झिझक न हुई।

बिन्दू के बदन पर जरा-सी लाल घमोरी क्या निकली, तुम लोग झट बोले- चेचक। किसी इल्जाम का सुबूत न था। सुबूत के लिए उसका 'बिन्दू' होना ही काफी था।

बिन्दू बड़ी होने लगी। साथ-साथ तुम लोगों की नाराजगी भी बढ़ने लगी। जब लड़की को घर से निकालने की हर कोशिश नाकाम हुई तब तुमने उसका ब्याह तय कर दिया।

लड़के वाले लड़की देखने तक न आये। तुम लोगों ने कहा, ब्याह लड़के के घर से होगा। यही उनके घर का रिवाज है।

सुनकर मेरा दिल काँप उठा। ब्याह के दिन तक बिन्दू अपनी दीदी के पाँव पकड़कर बोली, 'दीदी मुझे इस तरह मत निकालो। मैं तुम्हारी गौशाला में पड़ी रहूँगी। जो कहोगी सो करूँगी..।'

बेसहारा लड़की सिसकती हुई मुझसे बोली, 'दीदी क्या मैं सचमुच अकेली हो गयी हूँ ?'

मैंने कहा, 'ना बिन्दी ना। तुम्हारी जो भी दशा हो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।' जेठानी दीदी की आँखों में आँसू थे। उन्हंे रोककर

वह बोली, 'बिन्दिया, याद रख, पति ही पत्नी का परमेश्वर है।'

तीन दिन हुए बिन्दू के ब्याह को। सुबह गाय-भैंस को देखने गौशाला में गयी तो देखा एक कोने में पड़ी थी बिन्दू। मुझे देखकर फफककर रोने लगी।

बिन्दू ने कहा कि उसका पति पागल है। बेरहम सास और पागल पति से बचकर वह बड़ी मुश्किल से भागी।

गुस्से और घृणा से मेरे तन-बदन में आग लग गयी। मैं बोल उठी, 'इस तरह का धोखा भी भला कोई ब्याह है ? तू मेरे पास ही रहेगी। देखूँ तुझे कौन ले जाता है।'

तुम सबको मुझ पर बहुत गुस्सा आया। सब कहने लगे, 'बिन्दू झूठ बोल रही है।' कुछ ही देर में बिन्दू के ससुराल वाले उसे लेने आ पहुँचे।

मुझे अपमान से बचाने के लिए बिन्दू खुद ही उन लोगों के सामने आ खड़ी हुई। वे लोग बिन्दू को ले गये। मेरा दिल दर्द से चीख उठा।

मैं बिन्दू को रोक न सकी। मैं समझ गयी कि चाहे बिन्दू मर भी जाए वह अब कभी हमारी शरण में नहीं आयेगी।

तभी मैंने सुना कि बड़ी बुआ जी जगन्नाथपुरी तीर्थ करने जायंेगी। मैंने कहा, 'मैं भी साथ जाऊँगी।' तुम सब यह सुनकर खुश हुए।

मैंने अपने भाई शरत को बुला भेजा। उससे बोली, 'भाई अगले बुधवार को मैं पुरी जाऊँगी। जैसे भी हो बिन्दू को भी उसी गाड़ी में बिठाना होगा।'

उसी दिन शाम को शरत लौट आया। उसका पीला चेहरा देखकर मेरे सीने पर साँप लोट गया। मैंने सवाल किया, 'उसे राजी नहीं कर पाये ?'

‘उसकी जरूरत नहीं। बिन्दू ने कल अपने आपको आग लगाकर आत्महत्या कर ली।’ शरत ने उत्तर दिया। मैं स्तब्ध रह गयी। मैं तीर्थ करने जगन्नाथपुरी आयी हूँ। बिन्दू को यहाँ तक आने की जरूरत नहीं पड़ी। लेकिन मेरे लिए यह जरूरी था।

जिसे लोग दुःख-कष्ट कहते हैं, वह मेरे जीवन में नहीं था। तुम्हारे घर में खाने-पीने की कमी कभी नहीं हुई। तुम्हारे बड़े भैया का चरित्र जैसा भी हो, तुम्हारे चरित्र में कोई खोट न था। मुझे कोई शिकायत नहीं है। लेकिन अब मैं लौटकर तुम्हारे घर नहीं जाऊँगी। मैंने बिन्दू को देखा। घर गृहस्थी में लिपटी औरत का परिचय मैं पा चुकी। अब मुझे उसकी जरूरत नहीं। मैं तुम्हारी चैखट लाँघ चुकी। इस वक्त मैं अनन्त नीले समुद्र के सामने खड़ी हूँ।

तुम लोगों ने अपने रीति-रिवाजों के परदे में मुझे बन्द कर दिया था। न जाने कहाँ से बिन्दू ने इस परदे के पीछे झाँक कर मुझे देख लिया और उसी बिन्दू की मौत ने हर परदा गिराकर मुझे आजाद किया। मझली बहू खत्म हुई।

क्या तुम सोच रहे हो कि मैं अब बिन्दू की तरह मरने वाली हूँ। डरो मत। मैं तुम्हारे साथ ऐसा पुराना मजाक नहीं करूँगी।

मीराबाई भी मेरी तरह औरत थी। उसके बन्धन भी कम नहीं थे। उनसे मुक्ति पाने के लिए उसे आत्महत्या तो नहीं करनी पड़ी। मुझे अपने आप पर भरोसा है। मैं जी सकती हूँ। मैं जीऊँगी।

- तुम लोगों के आश्रय से मुक्त

मृणाल

- रवीन्द्रनाथ टैगोर

रवीन्द्रनाथ टैगोर भारत के महान कथाकारों में से एक हैं। कविता, चित्रकला और संगीत की दुनिया में भी उनका अपना विशेष स्थान है। लिखने का अति सरल ढंग अपनाते हुए उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों जैसे किसानों और जमींदारों के विषय में लिखा। जातिवाद, भ्रष्टाचार और निर्धनता जैसी सामाजिक बुराइयाँ उनकी रचनाओं का अभिन्न अंग बनी रहीं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म सन् 1861 ई0 में पश्चिमी बंगाल के एक धनी जमींदार परिवार में हुआ था। अपने लम्बे लेखन काल में उन्होंने 90 से अधिक लघुकथाओं की रचना की। स्त्री का पत्र उन्हीं कथाओं में से एक है। सन् 1941 ई0 में उनकी मृत्यु हुई।

शब्दार्थ

आवभगत = आदर-सत्कार। पीहर = मायका। बाजूबन्द = एक आभूषण जो बाँह में पहना जाता है। नाकाम = असफल। जगन्नाथपुरी = उड़ीसा राज्य में है जो हिन्दुओं के मान्य चारों धाम में से एक है।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को -

1. महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिवर्ष 8 मार्च को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर आपके आसपास कोई आयोजन हो तो उसमें शामिल होकर देखिए कि वहाँ क्या-क्या कार्यक्रम होते हैं। उन कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्ट बनाकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

2. अपने क्षेत्र की किसी सफल नारी का साक्षात्कार लेकर जानिए कि किन गुणों के कारण उसे जीवन में सफलता मिली।

3. महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों में दहेज, हत्या, मारपीट, छेड़छाड़, बलात्कार, अपहरण आदि के लिए भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं में कैद, जुर्माना या दोनों के साथ-साथ, कठोर कारावास से लेकर आजीवन कारावास तक की सजाएँ निर्धारित की गयी हैं। इस विषय में अपने शिक्षक/शिक्षिका से और जानकारी प्राप्त करें और उस जानकारी के आधार पर महिलाओं के साथ होने वाले अपराध और उनके लिए निर्धारित दंड का पोस्टर बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर लगाइए।

विचार और कल्पना

1. 'नारी-सम्मान एवं उसकी सुरक्षा' विषय पर कक्षा में चर्चा करके एक 'सुझाव-पत्र' तैयार कीजिए तथा अपनी कक्षा में टाँग दीजिए।

2. बालिकाओं की शिक्षा और उनके अधिकार की रक्षा के लिए आप अपने स्तर पर अपने परिवार में क्या-क्या करना चाहेंगे? एक सूची तैयार कीजिए।

3. प्रस्तुत पाठ पत्र-शैली में है। आप भी पत्र लिखिए -

(क) अपनी माता के नाम, जिसमें घरेलू समस्याओं का जिक्र हो।

(ख) अपने शिक्षक/शिक्षिका को, जिसमें विद्यालय को स्वच्छ-सुन्दर बनाने के तरीकों पर चर्चा हो।

4. समाचार-पत्रों में नारी-शोषण की विभिन्न घटनाएं प्रकाशित होती रहती है। दहेज प्रथा भी एक ऐसी कुरीति है जिससे नारी-शोषण होता है। दहेज प्रथा उचित है अथवा अनुचित इस बारे में अपने विचार लिखिए।

पत्र से

1. बिन्दू को लेकर मझली बहू के घरवाले क्यों चिन्तित हो उठे ?

2. बिन्दू का विवाह तय करते समय क्या धोखा किया गया ?

3. बिन्दू को दोबारा बलात् ससुराल भेजने का क्या परिणाम निकला ?

4. मझली बहू ने पत्र के अन्त में क्या निश्चय व्यक्त किया ?

5. कथन के भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) कविताएँ थीं तो मामूली लेकिन उनमें मेरी आवाज थी।

(ख) माँ बनने का दर्द मैंने उठाया, पर माँ कहलाने का सुख न पा सकी।

(ग) मैं तुम्हारी चैखट लाँघ चुकी हूँ।

(घ) मुझे अपने आप पर भरोसा है। मैं जी सकती हूँ। मैं जीऊँगी।

भाषा की बात

1. दिये गये मुहावरों के अर्थ बताते हुए वाक्य प्रयोग कीजिए-

(क) चैन की साँस लेना। (ख) फूटी आँखों न सुहाना। (ग) सीने पर साँप लोटना।

2. 'दूर' शब्द का अर्थ होता है- 'जो निकट न हो।' परन्तु इसी 'दूर' शब्द के पहले 'सु' उपसर्ग जुड़कर नया शब्द बनता है- 'सुदूर', जिसका अर्थ होता है - जो बहुत दूर हो। इसी प्रकार 'सु' उपसर्ग जोड़कर चार अन्य शब्द बनाइए।

3. ‘आज पन्द्रह साल हुए हमारे ब्याह को।’

‘मुझे बारहवाँ साल लगा था।’

ऊपर के वाक्यों में आये ‘पन्द्रह’ और ‘बारहवाँ’ शब्द को देखिए। दोनांे शब्द ‘साल’ की विशेषता बता रहे हैं। दोनों शब्द संख्यावाची विशेषण हैं- एक गणनाबोधक है, दूसरा क्रमबोधक। दो अन्य संख्यावाची विशेषण शब्द लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

इसे भी जानें

श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर को सन् 1913 ई0 में साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया था।